

युवाओं की जिम्मेदारी भी है

पिछले कई वर्षों से जागोरी दिल्ली में पुनर्वास क्षेत्रों— खादर, बवाना व दिल्ली विश्वविद्यालय में युवाओं के साथ काम कर रही है। अपने काम के दौरान जागोरी कार्यकर्ताओं ने यहां युवा समूह तैयार किए हैं जिन्हें शक्ति समूह (किशोरियों के लिए) व दोस्ताना समूह (किशोरों के लिए) के नाम से जाना जाता है। युवाओं को सशक्त बनाने का यह माध्यम उनके विचारों, आकांक्षाओं और उनके मन की बातों को बांटने के लिए एक विशेष मंच भी है। जागोरी से जुड़े कुछ युवाओं के विचार हम आपके साथ बांट रहे हैं।

हमारी युवा पीढ़ी पर न जाने कितने बोझ हैं। कोई कहता है आज का युवा किसी काम का नहीं है। तो किसी को युवा पीढ़ी पर फ़क्र है। पर युवा खुद आखिर क्या चाहते हैं? यह कोई पूछता ही नहीं है?

खैर युवा भी इसमें क्या करे? वो खुद आज दिशाहीन है। बाज़ार की होड़ के पीछे दौड़ती हुई यह पीढ़ी बहुत व्यस्त है। पहले पढ़ाई, फिर नौकरी और पैसा कमाने की दौड़।

युवाओं की कुछ जिम्मेदारियां भी हैं। ये युवाओं की ही तो जिम्मेदारी है कि वे सोचें कि आखिर ज़िंदगी में इतनी गला काट प्रतियोगिता क्यों है? क्यों सफलता पाने के लिए दूसरों को हराना ज़रूरी होता है? क्यों परीक्षा में सबसे अधिक अंक प्राप्त करने के लिए समझ नहीं रटना ज़रूरी हो जाता है?

असल में जिम्मेदारियों से भागने व प्रतियोगिता की होड़ में शामिल होने के पीछे है बाज़ारवाद। इस व्यवस्था में उत्पादन समाज के उपयोग के लिए नहीं बल्कि मुनाफ़े के लिए किया जाता है। इसलिए तो बाज़ार में सामान की कभी कमी नहीं होती लेकिन दूसरी तरफ लोग भूखे सोते हैं। गरीब और अधिक गरीब होते जाते हैं और अमीर और ज़्यादा अमीर। इसलिए तो मज़दूरों को ओवर टाइम करना पड़ता है ताकि मालिक ज़्यादा से ज़्यादा मुनाफ़ा कमाएं। इसलिए तो शिक्षा ज्ञान

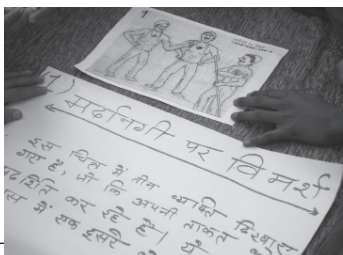
वर्धन के लिए नहीं बल्कि सिर्फ कौशल सीखने के लिए होती है। ऐसी अवस्था में पैसा और सत्ता ही सबसे महत्वपूर्ण कारक होते हैं। गरीबी और अमीरी के बीच खाई बढ़ती जाती है।

इन सबका अंत करना ज़रूरी है। इसके लिए ज़रूरत है तालमेल की, बातचीत की, फुर्सत से सोचने की। एक ऐसे समाज का निर्माण ज़रूरी है जहां इंसान अर्थव्यवस्था को चलाते हों न को इसके लिए आगे आना होगा। उन्हें सोचना पड़ेगा, दूसरों से बातचीत करनी पड़ेगी, दूसरों के दर्द को समझना पड़ेगा। युवा को आपस में सहयोग करने की भी ज़रूरत है। जब युवा अपनी इस जिम्मेदारी को उठाने के लिए सक्षम हो जाएंगे तभी समाज में प्रगति, समानता और सहयोग का माहौल बनेगा।

मधु जागोरी की कार्यकर्ता हैं।



मैंने जब से होश संभाला तब से कई तरह की अच्छी-अच्छी बातें सीखी हैं जैसे पढ़ना, लिखना, खेलना कूदना, घूमना आदि। आज भी मुझे पढ़ना लिखना बहुत अच्छा लगता है। पर मेरे घर में कुछ परेशानी की वजह से मेरी पढ़ाई अधूरी रह गई। लेकिन फिर भी मैं इतना तो पढ़-लिख लेती हूँ कि अपने घर के दो बच्चों को पढ़ा सकूँ।





हमने दोस्ताना समूह के साथ अपना काफी समय बरबाद होने से बचाया है। जागोरी की दीदी ने युवाओं का मार्गदर्शन करते हुए मदनपुर खादर में सुरक्षा व्यवस्था के बारे में विचार-विमर्श किया। युवा समूह चाहता है कि हमारी कालोनी एक सुरक्षित स्थान बने जिससे महिलाएं बिना किसी डर के कभी भी घर से बाहर आ-जा सकें। हमारे युवा समूह ने मिलकर पृथ्वी दिवस पर पेड़-पौधे लगाए तथा हेल्थ कैंप में बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया। हमने रेडियों कार्यक्रम व नुक्कड़ नाटक के माध्यम से अपनी बात लोगों तक पहुंचाने की भी कोशिश की।



अपने शक्ति समूह में मैं खुद को आत्मनिर्भर महसूस करती हूं। मैं अपनी बात को बेझिझक रखती हूं जिससे मेरे दिल को तसल्ली मिलती है। इससे मुझमें आत्मविश्वास बढ़ा है। अब मैं हर कठिनाई या परेशानी का सामना कर सकती हूं। अब मैं अपने आपको और मज़बूत बनाऊंगी और अपने जीवन को संवारूंगी।



मैं जागोरी शक्ति समूह से तीन साल से जुड़ी हूं। पहले ज़माने में औरतों को घर से बाहर नहीं निकलने दिया जाता था। उनसे घर में ही काम कराया जाता था और पुरुष बाहर काम पर जाया करते थे। लेकिन अब महिलाएं घर से बाहर निकलकर खुद अपने पैरों पर खड़ी होना चाहती हैं और घर व बाहर का काम बखूबी करती हैं।



पहले बेटियों को नहीं पढ़ाया जाता था क्योंकि मां-बाप कहते थे कि लड़की पढ़कर क्या करेगी। लेकिन आज ऐसा नहीं है। आज हर कोई अपनी बेटियों को पढ़ाता है क्योंकि जो लड़के कर सकते हैं वो लड़कियां भी कर सकती हैं।



मैं युवाओं के साथ मिलकर अनेक प्रकार के कार्यक्रम किए और मीटिंगों में शामिल हुआ। इससे मुझे स्वास्थ्य पर काफी जानकारी मिली।

मैंने अपने शरीर में कुछ परिवर्तन देखे और अपने दोस्तों से उन्हें बांटा। अब मैं अपने अधिकारों के बारे में भी जानने लगा हूं। मैं खेलों में रूचि रखता हूं लेकिन कभी सोचा नहीं था कि मैं एक एथलीट भी हो सकता हूं। पर अब इसके लिए खूब मेहनत कर रहा हूं।



मैं पिछले 3-4 साल से दोस्ताना समूह से जुड़ा हुआ हूं और शायद आने वाले समय में भी जुड़ा रहूंगा। मैंने इन वर्षों में जो भी अनुभव किया उसमें अपनी जिंदगी में उतारा है।

पहले मैं अपने जीवन को लेकर चिंतित था लेकिन अब मुझे काफी कुछ समझ में आ गया है। अब मैं ज़्यादा से ज़्यादा समय अपने परिवार के साथ व्यतीत करता हूं। मैंने युवाओं के साथ मिलकर काफी कुछ सीखा तथा जो भी सीखा उसे अपने घर वालों और पड़ोसियों को भी बताया। मैं अब महिलाओं व लड़कियों की मदद करने में कभी भी पीछे नहीं रहता हूं। मैंने जो कुछ सीखा व अनुभव किया है उसे मैं बाहरी देशों में जाकर उन युवाओं के साथ बांटूंगा जो इन जानकारियों से वंचित हैं।



समूह से जुड़ा तो मुझे काफी नई बातें सीखने को मिलीं। यहां मैं अपनी उम्र के युवकों से मिला तथा अपना अनुभव उन लोगों के साथ बांटा। पहले तो मुझे किसी प्रकार की ज़िम्मेदारी का अहसास नहीं था। पर अब मुझे अपनी ज़िम्मेदारियों का अहसास हुआ है और इस नए बदलाव से मैं काफी खुश हूं।

ये विचार शक्ति समूह व दोस्ताना समूह से जुड़े युवाओं के हैं।

फोटो: जागोरी

